केतिरी गुणियां, महिमा साध-संगति जी
सिद्ध साधक जोगी जती, गावनि सहस फणियां
जनक सनिक सुकदेव दत्त, सामी दास बणियां
जनि खे वाक वणियां, से सभई सुधिरिया.

सामीजी कहते हैं, ''मैं साधु-संतों की संगति की महिमा का क्या वर्णन करूँ? साधु-संतों की महिमा तो सिद्ध पुरुष, साधक जन, योगी, यती (वैरागी, सन्यासी) और सहस फनों वाला सेष नाग भी गाते हैं। स्वयं राजा जनक, महर्षि सनक, व्यासजी के ज्ञानी सुपुत्र शुकदेव, ऋषि दत्त (दत्तात्रेय) आदि भी साधु-संतों के दास (सेवक) बने हैं। ऐसे आत्मज्ञानी एवं ब्रह्मज्ञानी संतों की संगति में जिन मनुष्यों को उनके अमृत-वचनों का लाभ प्राप्त हुआ है, वे सभी सुधर गये, उनका जीवन सफल हो गया।

भक्ति-मार्ग के सिद्ध पुरुषों को 'संत' कहा गया है। भगवान के भक्त, परोपकारी एवं साक्षात्कारी संत को 'साधु' कहते हैं। साधु-संतों की बड़ी महिमा है। संतों के अनेक गुणों का वर्णन किया गया है। मनुष्य-समाज को मोक्ष प्राप्त करने का, आत्म-उद्धार करने का आसान मार्ग (नाम-स्मरण, नाम-भक्ति) दिखाने वाले संत आत्मज्ञानी एवं ब्रह्मज्ञानी होते हैं। परब्रह्म, परमेश्वर का साक्षात्कार भी संतों की कृपा से संभव है। संत ही आत्मज्ञान करा सकने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। आत्मज्ञान का दान दे कर संत मनुष्य के लिए मुक्ति का मार्ग खोल देते हैं। परोपकारी संतों की संगति प्राप्त होना भी भाग्य का लक्षण है।

ज्ञानेश्वरी, एकनाथी भागवत ग्रंथ, नामदेव-तुकाराम आदि संतों की कविता में संतों की महिमा एवं सत्संग की बड़ाई का वर्णन किया गया है। समर्थ स्वामी रामदास संतों को संपूर्ण सुख-संतोष का, आनंद का मूल मानते हैं। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत गोंदवले महाराज जी के शब्दों में, 'संत सूर्य की तरह संसार पर उपकार करने वाले होते हैं। वे हजारों-लाखों लोगों की परमेश्वर का नाम-स्मरण करने के लिए प्रेरित करने वाले होते हैं।' अविद्या/अज्ञान के भँवर से जीवों को बाहर निकालने का काम संत ही करते हैं। समाज में जागृति लाने वाले संत महान होते हैं। संतों को उपदेश से सामान्य जनों को आंतरिक दुखों से छुटकारा मिलने की औषधि मिल जाती है। संत विषयों के प्रति आसक्ति कम करने वाले होते हैं और ईश्वर के प्रति प्रीति बढ़ाने वाले होते हैं। सामी साहब भी विविध उदाहरणों एवं महाजनों के उल्लेखद्वारा संतों की महत्ता प्रतिपादित करते हैं। कबीर के शब्दों में,

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधि में पुनि आध।
कबीर संगत साधु की, कटै कोटि अपराध॥

■